तित्थयर

वर्ष २२ अंक-४ जुलाई १९९८

जैन भवन

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ४, जुलाई १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रवेश और विस्तार	डा° नेमिचन्द शास्त्री	६१
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	७०
३.	राजा सम्प्रति		८०
४.	पुस्तक समीक्षा	--	८३

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तिया एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो माया मित्ताणि
नामेइ, लोभो सव्वविणासणो ।

(दश° अ° ८ गा° ३८)

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता
है, माया मित्रता का नाश करती है, और लोभ सभी
सदगुणों का नाश कर देता है ।

दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रवेश और विस्तार

डा० नेमिचन्द शास्त्री

दक्षिण भारत के इतिहास निर्माण में जैन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस संस्कृति का इस भूभाग के राजनैतिक, धार्मिक और साहित्यिक जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा है। यद्यपि जैन धर्म के सभी प्रवर्त्तक उत्तर भारत में उत्पन्न हुए हैं, पर दक्षिण में इस धर्म का प्रवेश प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ के समय में ही हो गया था। ऐसे अनेक ऐतिहासिक सबल प्रमाण वर्तमान हैं, जिनसे प्रागैतिहासिक काल में दक्षिण भारत में जैन धर्म का अस्तित्व सिद्ध होता हैं।

मदुरा और रामनद से खुदाई में ई० पू० ३०० के लगभग का प्राप्त शिलालेख इस बात को सिद्ध करता है कि जैन धर्म दक्षिण भारत में ई० पू० ३०० से पहले उन्नत अवस्था में था। यह ब्राह्मी लेख अशोक लिपि में लिखा गया है, इसमें मधुराई, कुमत्तुर आदि कई शब्द तामिल भाषा के भी मिलते हैं। यद्यपि अब तक इस लेख का स्पष्ट वाचन नहीं हो सका है, किन्तु इसी प्रकारके अन्य लेख भी मारूगलतलाई, अनमैलिया, तिरूपरन्नकुरम् आदि स्थानों में मिले हैं; जिनके आस-पास तीर्थंकरों की भग्न मूर्तियाँ तथा जैन मन्दिरों के ध्वंसावशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिससे पुरातत्वज्ञों का अनुमान है कि ये सभी लेख जैन हैं। अलगामलै की खुदाई में प्राप्त जैन मूर्तियाँ भी इस बात की साक्षी हैं कि दक्षिण भारत में यह धर्म ई० पू० ३०० के पहले एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गया था जिससे कि जैन स्थापत्य और मूर्त्तिकला उन्नत अवस्था में थी।[1]

लंका के राजा धातुसेन (४६१-४७९ ई०) के समय में स्थविर महानाम द्वारा निर्मित महावंश नामक बौद्ध काव्य से पता चलता है कि ई० पू० ५०० के पहले दक्षिण भारत में जैन धर्म का पूर्ण प्रचार था। उस काव्य में बताया गया है कि राजा पाण्डुगम्य ने अनुराधपुर में अपनी राजधानी ई० पू० ४३७ में बसाई थी। इस नगर में विभिन्न प्रकार के सुन्दर भवनोंका निर्माण कराया गया था। राजाने एक 'निग्गन्थ[2] कुबन्थ' नाम का सुन्दर जैन चैत्यालय

बनवाया था तथा इस नगर में ५०० विभिन्न धर्मानुयायियों के बसने का भी प्रबन्ध किया था। इस कथन से स्पष्ट है कि जैन धर्म लंका में ई० पू० ५०० के पंहले विद्यमान था।

जैन प्रचारक यद्यपि लंका को समुद्र मार्ग से गए थे, पर लौटते समय वे स्थल मार्ग द्वारा दक्षिण के रास्ते से आए थे, यह बात तामिल और बौद्ध साहित्य से स्पष्ट है। अतः लंका में जैन धर्म का प्रचार के साथ-साथ दक्षिण भारत में भी जैन धर्म का प्रचार ई० पू० ५०० के लगभग या इससे पहले हुआ होगा।

राजावली कथा एक प्रामाणिक ऐतिहासिक काव्य माना जाता है। इसमें बताया गया है कि विशाख मुनि ने चोल और पाण्ड्य प्रान्तों में भ्रमण कर वहाँ के जैन चैत्यालयों की वन्दना की थी तथा वहाँ के निवासी श्रावकों को जैन धर्म का उपदेश दिया था। इससे स्पष्ट है कि भद्रबाहु स्वामी के पहले भी जैन धर्म दक्षिण में था, अन्यथा विशाखमुनि को जिन मन्दिर और जैन श्रावक कैसे मिलते ?

तामिल साहित्य के प्राचीन व्याकरण अगथियम[3] और उससे प्रभावित तौल्काप्याम के अध्ययन से पता लगता है कि ये ग्रन्थ एक जैनाचार्य द्वारा रचे गये हैं। विद्वानों ने इनका रचनाकाल ई० पू० ४०० माना है। अतएव स्पष्ट है कि ई० पू० ४०० के लगभग दक्षिण भारत में जैन धर्म का व्यापक प्रचार था। संगम[4] कालीन तामिल काव्य 'मणिमेरवलै' और 'सीलप्प-ड्डिडकारम्' में ज्ञात होता है कि इस युग में जैन धर्म समुन्नत अवस्था में था। 'संगम' युग के समय निर्धारण के सम्बन्ध में विद्धानों में मतभेद है। कुछ लोग ई० पू० २०० के पूर्व के समय का नाम संगम या प्राथमिक युग बतलाते हैं तथा कतिपय विद्वान् ई० पू० चौथी शताब्दी से ई० दूसरी शताब्दी तक के काल समूह को। यदि इस विवाद में न भी पड़ा जाय तो भी इतना तो सुनिश्चित है कि भद्रबाहु स्वामी के दक्षिण पहुँचने के पूर्व ही जैन धर्म वहाँ विद्यमान था।

कन्नड़ रामायण में बताया गया है कि श्रीमुनिसुव्रत भगवान् के तीर्थंकर काल में श्री रामचन्द्रजी ने दक्षिण भारत की यात्रा की थी, इस यात्रा में उन्होनें जैन मुनि और जैन चैत्यालयों की वन्दना की थी।

भागवत पुराण में भगवान् ऋषभदेव[5] के परिभ्रमंण की एक कथा आई

है । उस कथा में बताया गया है कि जिस प्रकार कुम्हारका चाक स्वयं चलता है, उसी प्रकार भगवान् ऋषभदेव का शरीर कोंक, वेंकट इत्यादि दक्षिण कर्णाटक के प्रदेशों में गया । कुटक पहाड़ से सटे हुए जंगल में उन्होंने नग्न होकर वहाँ तपस्या की । कोंक, वेंकट और कुटक के राजाओं ने ऋषभदेव के धर्म मार्ग को ग्रहण किया । इससे स्पष्ट है कि कुटक ग्राम, हट्टेंगडि, कोंक आदि दक्षिण भारत के प्रदेशों में जैन धर्म का प्रचार प्राचीन काल में ही था । उपर्युक्त स्थानों में हट्टेंगडि आज भी जैनियों का पवित्र क्षेत्र माना जाता है ।

विष्णुपुराण में कहा गया है कि नाभि और मरूके पुत्र ऋषभ ने बड़ी योग्यता और बुद्धिमानी से शासन किया तथा अपने काल में अनेक यज्ञ किए । चतुर्थावस्था में वह अपना राजपाट अपने बड़े पुत्र भरत को सौंप कर सन्यासी हो गए और दक्षिण भारत में स्थित पुलस्त्य ऋषि के आश्रम में निवास किया । इससे स्पष्ट है कि प्रथम तीर्थंकर दक्षिण में गए थे ।

हिन्दु पुराणों में एक संवाद[6] आता है, जिसमें बताया गया है कि देव और असुरों के युद्ध के बीच जैन धर्म का उपदेश विष्णुने किया था– "बृहस्पतिसाहाय्यार्थ विष्णुना मायामोह समुत्पादनम् दिगम्बरेण मायामोहेन दैत्यान् प्रति जैनधर्मोपदेशः, दानवानां मायामोहमोहितानां गुरूणा दिगम्बर-जैनधर्मदीक्षादानम्" । अर्थात् देव-मन्त्री बृहस्पतिकी सहायता के लिए विष्णु भगवान् ने मोहमाया नामक एक दिगम्बर साधुको उत्पन्न किया और दैत्यों को जैन धर्म का उपदेश उससे दिलाया, जिससे दानव जैन धर्म में दीक्षित हो गए । इस संवाद में एक रहस्य यह छिपा प्रतीत होता है कि विष्णु ने जैन मुनि का अवतार लेकर असुरोंको दीक्षा दी । यहाँ यह मान लिया जाए कि असुर जिनका यहाँ वर्णन किया गया है, वे वही लोग थे जो यहां के आदि निवासी थे और दक्षिण भारत के किनारे के प्रदेशों में रहते थे । ये आदिम निवासी सभ्य, संस्कृत और स्वतन्त्र थे, दास नहीं । इन्होंने आर्यों के आने के पूर्व भारत को अपने अधिकार में कर लिया था; तो इससे स्पष्ट है कि जैन धर्म का केन्द्र उस समय नर्मदा नदी के तटपर स्थित था जो कि आज भी तीर्थ स्थान के समान पूज्य है ।

उपर्युक्त कथनका समर्थन काठियावाड़में[7] प्राप्त एक ताम्रपत्र से भी होता है । यह ताम्रपत्र महाराज नेबूचदनेज़र प्रथम अथवा द्वितीय (ई॰ पू॰

११४० या ई॰ पू॰ ६००) का है। प्रो॰ प्राणनाथ ने इसका वाचन करते हुए बताया था कि यह महाराज विवलोनियाका निवासी था, वहाँ से यह द्वारिका आया था; यहाँपर इसने एक मन्दिर बनवाया और इस मन्दिर को नेमि या अरिष्टनेमिको अर्पण किया। नेमि उस समय रैवत गिरि (गिरनार) के देव थे। इससे स्पष्ट है कि नेमि या अरिष्टनेमि जो कि जैन तीर्थंकर है, के प्रति नेबूकी बड़ी भारी श्रद्धा और भक्ति थी।

दक्षिण भारत में जैन धर्म की प्राचीनता के जैन साहित्य में अनेक प्रमाण हैं। निर्वाणकाण्डकी निम्न गाथा में बताया हैं–

पण्डुसुआतिण्णिजणा दविडणरिदाण अट्ठकोडिओ।
सेतुंजय गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

अभिप्राय यह है कि पल्लवदेश में विराजमान भगवान् अरिष्टनेमि के निकट पाण्डवों ने जिनदीक्षा ग्रहण की थी; इनके साथ दक्षिण देश के और भी कई राजाओं ने मुनिव्रत धारण किया था; जो कि पाण्डवों के साथ तपकर शत्रुंजयगिरि से मुक्त[8] हुए थे।

महापुराणमें बताया गया है कि जब कल्पवृक्ष लुप्त हो गए और कर्म भूमिका आरम्भ हो गया तो अन्तिम कुलकर नाभि राजा के पास प्रजा आयी। उन्होंने उसे भगवान् ऋषभनाथ के पास भेज दिया। प्रजाने भगवान् ऋषभनाथ से प्रश्न किया– भगवन्! कृपाकर आजीविका का उपाय बतलाइये, जिससे हमलोग सुखपूर्वक रह सकें। भगवान् ने प्रजाको षट्कर्मों का उपदेश दिया। उनके स्मरणमात्र से इन्द्र अनेक देवों के साथ आ उपस्थित हुआ और उसने संकेतमात्र से ही नगर, गाँव, देश और प्रान्तों का वर्गीकरण कर दिया। तथा वहाँ जिन चैत्यालय, जिनबिम्ब एवं अन्य जैन संस्कृति के चिन्हों को प्रकट किया। बनाये गए देशों की संख्या ५२ बतायी गयी है; जिसमें दक्षिण भारत के अनेक बड़े-बड़े नगर शामिल है[9]–

करहाटमहाराष्ट्रसुराष्ट्रभीरकोंकणाः।
वनवासान्ध्रकर्णाटकोशलाश्चोलकेरलाः॥
दार्वाभिसारसौवीरशरसेनापरान्तकाः।
विदेहसिन्धुगान्धारपवनाश्चेदिपल्लवाः॥
कांवोजारट्टबाल्हीकतुरूष्कशककेकयाः।

महापुराण में भरत चक्रवर्ती की विजयका वर्णन करते हुए दक्षिण

दिशाके राजाओ पर की गयी विजय के निरूपणमें बताया है कि–

चोलिकान्नालिकप्रायान्प्रायशोऽनृजुचेष्टितान् ।
केरलान्सरलालापान्कलगोष्ठीषु चंचुरान् ॥
पाण्डयान्प्रचंडटोर्दण्डन् खण्डितारातिमण्डलान् ।

इससे स्पष्ट है कि भरत चक्रवर्ती ने चोल, पाण्डय केरल आदि राजाओंको हराकर वहाँ जैन धर्म का प्रचार किया था । प्रत्येक नरेश उस युग में पराजित देशों में अपने धर्मका प्रचार करता था । दूसरी बात यह है कि भगवान् ऋषभदेव के संकेत से जब इन्द्रने प्रान्तों और देशोंका वर्गीकरण किया था, उस समय जैन चैत्यालयों का निर्माण भी हुआ था, अतः उत्तर के समान दक्षिण में भी भरत चक्रवर्ती ने जैन चैत्यालयों की वन्दना करते हुए विजय प्राप्त की थी ।

पोदनापुर मे दक्षिण भारत के प्रथम जैन सम्राट्, बाहुबली स्वामीकी राजधानी बताई गई है, यह स्थान आज भी दक्षिण भारत में स्थित है । इसी प्रकार जैन साहित्य में पोलासपुर, मदुरा, भद्दिल आदि नगरों के नाम मिलते हैं । इन नगरों में भगवान् ऋषभदेव के समय में ही जैन धर्म का प्रचार बताया गया है ।

दाक्षिणात्य मथुरा–मदुरा नगर, को पाण्डवोंने बसाया था। कहा गया है–

सुतास्तु पाण्डोर्हरिचन्द्रशासनादकाण्ड एवाशनिपातनिष्ठुरान् ।
प्रगत्य दाक्षिण्यभृता सुदक्षिणां जनेन काष्ठां मथुरां न्यवेशायन् ॥

जब द्वारिका नगरी नष्ट हो गई और कृष्ण अपने भाई बलदेव के साथ दक्षिण मथुराको चले, रास्तेमें कौशाम्बीके जंगलमें जरतकुमारने बाण चलाया, जो कि श्रीकृष्ण के पाँव में लगा; जिससे उनका आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड़कर चला गया । जब पाण्डवों को यह दुःखद समाचार मिला तो वे बलदेव से मिलने के लिए कौशाम्बी के जंगल में आए और उन्हें समझा बुझाकर यह तय किया कि नारायण के शव का संस्कार श्रृंगी गिरिपर कर दिया जाय।

पाण्डव दक्षिण के पल्लव देश में भगवान् नेमिनाथ का विहार अवगत कर मदुरा को लौट आए और भगवान् नेमिनाथ के पास जाकर जैन-दीक्षा ग्रहण कर ली । पाण्डवों के साथ और भी कई दक्षिणी राजाओं ने जैन-दीक्षा ग्रहण की, अतएव यह स्पष्ट है कि भगवान् नेमिनाथ ने दक्षिण के

देशों में विहार कर जैन धर्म का प्रचार किया था ।

अथ ने पाण्डवाश्चंडसंसारभयभीरवः ।
प्राप्य पल्लवदेशेषु विहरंतं जिनेश्वरम् ॥

हरिवंश पुराण के एक अन्य कथानक से ज्ञात होता है कि महाराज श्रीकृष्ण का युद्ध जब जरासिन्धु के साथ हो रहा था तो दक्षिण भारत के कई राजा भी उनके पक्ष में थे । इसका कारण यह है कि मदुरा में पाण्डवों का राज्य स्थापित हो जाने पर द्राविड़ राजाओं का सम्पर्क उत्तर के राजाओं के साथ घनिष्ठ होता जा रहा था । चेर, चोल, पाण्डय आंदि वंशके राजाओं का इनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था । इसलिए पाण्डवों के साथ इन्होंने जिन-दीक्षा ग्रहण की थी ।

णायकुमार चरिउ[10] में कहा गया है कि भगवान् नेमिनाथ के तीर्थकाल में कामदेव नागकुमार हुए थे । नागकुमार का मित्र मथुरा का राजकुमार महाव्याल था । यह महाव्याल पाण्डय देश गया था और पाण्डय राजकुमारी को विवाह कर ले आया था । भगवान् पार्श्वनाथ के समय में करकण्डु नाम का एक राजा हुआ है । उसने अपने राज्यका खूब विस्तार कर एकंदिन मंत्री से पूछा, हे मन्त्री ! क्या कोई ऐसा राजा है जो मुझे मस्तक न नमाता हो ? मंत्री ने उत्तर दिया – उत्तर के तो सभी राजा आपकी अधीनता स्वीकार कर चुके हैं, पर द्राविड़ देश के चेर, चोल और पाण्डय नरेश आपको नहीं मानते । राजाने उनके पास दूत भेजा, पर उन राजाओं ने करकण्डु की अधीनता नहीं स्वीकार की और यह कहकर दूतको वापस कर दिया कि हम जिनेन्द्र भगवान को छोड़ और किसी को सिर नहीं झुका सकते । राजा करकण्डुको द्रविड़ राजाओं के उत्तर ने अधिक उत्तेजित कर दिया; इससे उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इन राजाओं को वश में न कर लूँगा, शान्तिसे राज्य नहीं करूँगा और इनको पददलित न करूँ तो राज्य-पाट छोड़ दूँगा ।

करकण्डु ने सेना सजाकर युद्ध के लिए प्रस्थान कर दिया और रास्ते में तेरापुर नगरमें पहुँचा, यहाँ राजा शिव ने उसे भेंट चढ़ाई तथा राजा शिवके परामर्श से पासकी पहाड़ीकी गुफामें भगवान् पार्श्वनाथ के दर्शन किए । उस पहाड़ी पर चमत्कारकी एक बात यह थी, एक हाथी प्रतिदिन उस पहाड़ी पर स्थित एक वामीकी पूजा करता था । राजा करकण्डु ने उसकी पूजाको देखकर अनुमान लगाया कि निश्चित इस वामीके नीचे कोई देवमूर्त्ति

है, अन्यथा यह पशु पूजा नहीं करता, अतः उस वामीको खुदवाया। खुदाई में नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की एक मूर्त्ति निकली जिसे वह वड़ी भक्ति और श्रद्धाके साथ गुफामें ले आया। इसके पश्चात् वह राजा इधर-उधर भ्रमण करता हुआ दक्षिण पहुँचा तथा चेर, चोल और पाण्डय नरेशोंकी सम्मिलित सेनाओं का सामना किया तथा अपने युद्ध कौशलसे उन्हें हराकर अपना प्रण पूरा किया। जब करकण्डु राजा उन पराजित राजाओं के सिर के ऊपर पैर रखने लगा तो उनके मुकुटों में स्थित जिन प्रतिमाओं के दर्शन उसे हुए; जिससे उसे भारी पश्चात्ताप[11] हुआ। उन्हें उसने फिर राज्य देना चाहा, पर वे स्वाभिमानी द्रविड़ाधिपति यह कर तपस्याको चले गए कि अब हमारे पुत्र-पौत्रादि ही राज्य को चलायें गे।

जम्बू स्वामी चरित्र से भी अवगत होता है कि विद्युच्चर नामका चोर जम्बूकुमार के प्रभाव के कारण चोरी से विरक्त हो गया था और यह भ्रमण करता हुआ समुद्र के निकट स्थित मलयाचल पर्वत पर पहुँचा। यहाँ से वह सिंहलद्वीप गया, लौटते समय वह केरल आया था। द्रविड़ देशको उसने जैन मन्दिरों और जैन श्रावकों से पूर्ण देखा। अनन्तर वह कर्णाटक, काम्बोज, कांचीपुरम सह्यपर्वत, आभीर आदि देशों में भ्रमण करता हुआ किष्किन्धापुर में आया। इस भ्रमण वृत्तान्त से स्पष्ट है कि भद्रबाहु स्वामी के जाने के पहले दक्षिण प्रान्त में जैन धर्म फल-फूल रहा था। यदि वहाँ जैन धर्म उन्नत अवस्था में नहीं होता तो यह विशाल मुनिसंघ, जिसकी कि आजीविका जैन धर्मानुयायी श्रावकों पर ही आश्रित थी, विपत्तिके समय कभी भी दक्षिणको नहीं जाता। बुद्धि इस बातको कभी स्वीकार नहीं करती है कि भद्रबाहु स्वामी इतने अधिक मुनियों की संख्याको बिना श्रावकों के कैसे ले जानेका साहस कर सकते थे?.अतः श्रावक वहाँ विपुल परिमाण में अवश्य वर्तमान थे। इसीलिए भद्रबाहु स्वामी ने अपने विशाल संघको दक्षिण भारत की ओर ले जानेका साहस किया।

भद्रबाहु स्वामी की इस यात्राने दक्षिण भारत में जैन धर्म के फलने और फूलनेका सुअवसर प्रदान किया। बौद्धोंकी जातक कथाओं और मेगस्थनीज के भ्रमणवृत्तान्तों से अवगत होता है कि उत्तरमें १२ वर्षका भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा था और चन्द्रगुप्त मौर्य भी अपने पुत्र सिंहसेनको राजगद्दी देकर भद्रबाहुके साथ दक्षिण में आत्मशोधनके लिए चला गया था। चन्द्रगिरि

पर्वतपर चंद्रगुप्त की द्वादश वर्षीय तपस्याका वर्णन मिलता है । भद्रबाहु स्वामीने अपनी आसन्न मृत्यु ज्ञातकर मार्ग में ही कहीं समाधिमरण धारण किया था। इनका मृत्युकाल दिगम्बर परम्परानुसार वीर नि° सं° १६२ और श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा वी° नि° १७० माना जाता है ।

दक्षिण में पहुंचकर इस संघने वहाँ जैन धर्म का खूब प्रसार किया तथा जैन साहित्यका निर्माण भी विपुल परिमाण में हुआ । इस धर्म के प्रचार और प्रसारकी दृष्टिसे दक्षिण भारत को दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है– तामिल प्रान्त और कर्णाटक । तामिल प्रदेश में चोल और पाण्डय नरेशों में जैन धर्म पहले से ही वर्तमान था, पर अब उनकी श्रद्धा और भी दृढ़ हो गयी तथा इन राजाओं ने इस धर्म के प्रसार में बड़ा सहयोग प्रदान किया । सम्राट एल. खारवेल के एक शिलालेख से पता चलता है कि उसके राज्याभिषेक के अवसर पर पाण्डय राजाओंने कई जहाज उपहार भेजे थे। ये सभी राजा जैन थे इसीलिए जैन सम्राट के अभिषेक के अवसर पर उन्होंने उपहार भेजे थे । इनकी राजधानी मदुरा जैनों का प्रमुख प्रचार केन्द्र बन गई थी । तामिल ग्रन्थ 'नालिदियर' के सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि भद्रबाहु स्वामी के विशाल संघ के आठ सहस्र जैन साधु पाण्डय देश गए थे, जब वे वहाँ से वापस आने लगे तो पाण्डय नरेशों ने उन्हे आनेसे रोका । एक दिन रातको चुपचाप इन साधुओं ने राजधानी छोड़ दी; पर चलते समय प्रत्येक साधुने एक-एक ताड़पत्र पर एक-एक पद्य लिखकर रख दिया; इन्हीं पद्यों का संग्रह 'नालिदियर' कहलाता है ।

तामिल साहित्य का वेद कुरलकाव्य माना जाता है, इसके रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द हैं । इन्होंने असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण से इसे लिखा है; जिससे यह काव्य मानवमात्र के लिए अपने विकास में सहायक है । जैनों के तिरूकुरूल, नालदियर, पछिमोछी, नानुछी, चिंतामणि, सीलप्पडिकारम्, चलणप्रदि आदि तामिल भाषाके काव्य विशेष सुन्दर माने जाते हैं । इनके अतिरिक्त पेरकंदै, यशोधरकाव्, चूड़ामणि, एलादी, कलिंगतुप्ररणी, नन्नूल, नेमिनाद, यप्पांरू, श्रीपुराण, मरूमंदर पुराण आदि तामिल ग्रन्थ भी कम प्रशंसा के योग्य नहीं । यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि व्याकरण, छन्द, अलंकार, दर्शन और जैनागम प्रभृति विभिन्न विषयों के उत्तमोत्तम ग्रन्थ लिखकर तामिल वाङ्मयको समृद्धिशाली और उत्कृष्ट स्थिति में लाने का

श्रेय जैनाचार्यों को ही है। जैनाचार्य पूज्यपादके शिष्य व्रजनन्दिने पाण्ड्योंकी राजधानी मदुरा में एक विशाल जैन संघकी स्थापना की थी; इस संघ द्वारा तामिल प्रांत में जैन धर्म का खूब प्रचार हुआ। आचार्य कुंदकुंद ने पोन्नूरग्राम के निकट नीलगिरि नामक पर्वत पर तपस्या की थी, इनके आश्रम में आकर पल्लव वंशी शिवस्कन्दवर्म महाराज ने प्राभृत त्रयका अध्ययन किया था।

तामिल देशके इतिहास में जैन धर्म का ई° तीसरी और चौथी शताब्दी में कम प्रभाव दिखाई पड़ता है। पाँचवीं और छठीं सदीमें शैवधर्म का बड़ा भारी जोर रहा है, फिर भी जैनोंकी तात्कालीन परिस्थितिका चित्रण वैष्णव और शैवपुराणों में मिल जाता है। सातवीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी तक शैवधर्म के समानान्तर जैन धर्म भी चलता रहा। गंगवाडि के गंगवंशीय राजाओं ने इस धर्म को विशेष प्रोत्साहन दिया, जिससे विधर्मियों के द्वारा नाना प्रकारके अत्याचारोंके होनेपर भी इसकी क्षीण रेखा ११ वीं सदीके अन्त तक दिखलाई पड़ती रही।

क्रमशः

1. See Madras Epigraphical Reports 1907, 1910.
2. See Studies in South Indian Jainism P-33.
3. See Jaina Gazette, Vol. XIX, P-75.
4. Buddhistic Studies, PP. 3, 68.
5. जैन सिद्धान्त-भास्कर भाग १० किरण १ तथा भाग ६ पृ° १०२।
6. विष्णुपुराण अध्याय १७, मत्स्यपुराण अ° २४, पद्मपुराण अध्याय १ और देवीभागवत् स्कन्ध ४, अ° १३।
7. See Indian Culture April 1938. P.515, and Times of India, 19th March 1935, P-9.
8. देखे–संक्षिप्त जैन इतिहास भा° ३ सं° १ पृ-११४।
9. जिनसेनाचार्य विरचित महापुराण पर्व १६ श्लो° १३०-१६५।
10. हरिवंश पुराण सर्ग ४५ श्लो° ७३।
11. संक्षिप्त जैन इतिहास भाग ३ खं° १ पृ-११४।
12. हा हा मई मूढइं कि कियउ, जिन बिंचु विचरणे आहयउ।

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजय भद्रगुप्त सूरीजी महाराज

दिशापरिमाण नहीं करने से नुकसान :

परन्तु जो लोग इस व्रत का महत्व नहीं समझते हैं, वे लोग यह व्रत ग्रहण नहीं करते हैं और कभी आपत्ति में फंस जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक महानुभाव ने अपना स्वानुभव सुनाते हुए मुझे कहा था–

एक बार हमारे गांव में एक महात्मा आए थे। गांव में हमारा एक ही जैन का घर था। मुनिराज को हमारे दूसरे घर में ठहराया और यथाशक्ति उनकी सेवा की। दूसरे दिन प्रातःकाल वे विहार कर रहे थे, उन्होंने मुझे कहा : 'करमचंद, कुछ व्रत-नियम करना चाहिए।' मैंने कहा : 'महाराज, मेरे से कोई व्रत-नियम होता नहीं है...मुझे क्षमा करें।' उन्होंने कहा : 'ठीक है, आज-आज के लिए दिशापरिमाण व्रत कर लो।' मैंने कहा : 'इस व्रत में क्या करना का होता है ?' उन्होंने कहा : 'आज यह गांव छोड़कर बाहर नहीं जाना।'

मैंने सोचा : 'आज मुझे बाहर गांव जाना भी नहीं है, और मुनिराज कितने वर्षों के बाद मेरे गांव में आए हैं तो उनकी बात माननी चाहिए।' मैंने व्रत ले लिया, प्रतिज्ञा कर ली– 'आज मैं गांव के बाहर नहीं जाऊंगा।'

मुनिराज को बिदा देकर घर पर लौटा। सुबह का नाश्ता कर लिया, स्नान कर लिया और दुकान जाकर बैठा। उस समय बाहर गांव के दो आदमी मेरी दुकान पर आए और पूछा : 'सेठ करमचंद आप ही हैं क्या ?' मैंने उन को आदर दिया और दुकान में गद्दी पर बिठाया। चाय पिलाकर मैंने पूछा : 'कहिए, यहाँ किस वजह से पधारे हैं ?' उन्होंने कहा : 'बात बहुत गंभीर है, बंद कमरे में करने की है।'

दुकान के भीतर दूसरा कमरा था। हम वहां जाकर बैठे। दो में से एक पतला शरीरवाला और गौर वर्ण का युवक था। उसने बात का प्रारंभ करते हुए कहा : 'हमारे पास सोना है। हमें बेचना है। बाजार में जो भाव चलता है, उस से आधे भाव में आपको देंगे।'

सस्ते सोने की बात सुनते ही मेरे मुंह में पानी आ गया । परन्तु मैंने पूछा : 'आप को मेरा नाम-गांव किसने बताया ?'

'करमचंद सेठ, आपका नाम आपके ही किसी स्नेही ने बताया है । बताने वाले के पास पैसे नहीं हैं, अन्यथा वो ही सोना ले लेता । हमें तो नगद रूपये चाहिए । एक हाथ से सोना और दूसरे हाथ से रूपये ।'

'आपके पास कितना सोना है ?'

'आप जितना चाहें उतना । रूपये नगद देने होंगे ।'

'अभी आपके पास कितना सोना है ?'

'सोना हम साथ नहीं रखते हैं । आपको हमारे साथ चलना होगा ।'

'कहां चलना होगा ?'

'नडियाद (गुजरात) स्टेशन उतर जाएंगे, वहां से दो माइल पैदल जाना होगा । रात्रि के समय काम करना होगा ।'

'कल चलेंगे...तो चलेगा क्या ?' मैंने पूछा । उस युवक ने कहा :

'नहीं, आज ही चलना होगा । आज रात में ही हमें वहां पहुंचना होगा ।'

मैंने सोचा कि आज मैंने व्रत लिया है, गांव छोड़कर बाहर नहीं जाने का और यह आज ही जाने की बात करता है । ऐसा भाग्योदय पहली बार ही आया है जिंदगी में । लाख रूपये का सोना ले लूं । सोने के भाव बढ़नेवाले हैं....लाखों रूपये कमा लूंगा ।'

प्रश्न : उस समय क्या भाव चलता था ?

महाराजश्री : यह तो सेठ करमचंद को पूछना पड़ेगा, और वे तो ऊपर चले गये हैं कभी के । परन्तु यह बात करीबन् ५५ साल पहले की है । उस समय तोले का भाव ५० रूपये के आसपास होगा । करमचंद ने शायद उस से भी कम भाव देखे होंगे और भविष्य में भाव बढ़नेवाले हैं – ऐसा भी सोचा होगा ।

करमचंद ने मुझे कहा : 'मैं लालच में फंस गया । बार बार लक्ष्मी सामने चलकर नहीं आती.... । व्रत का भंग होगा...परन्तु बाद में प्रायश्चित कर लूंगा ।'

प्रश्न : इस प्रकार जानबूझ कर व्रतभंग करे और बाद में प्रायश्चित करे – तो चल सकता है ?

महाराजश्री : क्या आपको भी करमचंद की लाईन में नाम लिखाना है ? यह तो करमचंद के विचार, उसका मनोमंथन बता रहा हूं, शास्त्र का सिद्धान्त नहीं बता रहा हूं । लोभ-लालच में फंसनेवाला मनुष्य कैसे-कैसे विचार करता है और अपने मन का समाधान करता है, यह बता रहा हूं।

करमचंद ने कहा : 'मैं उन दो आगन्तुक भाईयों की बात पर विश्वास कर लिया और उनके साथ चलने के लिये तैयार हो गया । परन्तु रूपये साथ नहीं लिए । सोचा कि रूपये यहां घर पर ही दे दूंगा । उन दो भाईयों से बात नहीं की । हम चल दिये । स्टेशन दो माईल दूर था । हम चलते चलते स्टेशन पहुंचे । रास्ते में बहुत सी बाते उन्होंने बतायी । मेरा उन पर विश्वास दृढ़ होता गया । वे मधुरभाषी थे । चतुर थे ।

स्टेशन जाकर गाड़ी में बैठ गए । रात में १२ बजे नडियाद स्टेशन पहुंचे । वहां से हम जंगल के रास्ते पैदल चल दिये । अब वे दो व्यक्ति बोलते नहीं थे, मौन चल रहे थे । एक मेरे आगे था, एक पीछे । करीबन एक घंटा चलते रहे । एक झोंपड़ी आयी । झोंपड़ी खाली थी...एक मंद दीया जल रहा था । अंदर एक रास्ता था । एक आदमी ने कहा : 'मेरे पीछे पीछे आना ।' पगथिये थे । मैं पगथिये उतरने लगा, परन्तु मेरा मन साशंक बन रहा था । मैं कुछ भय अनुभव कर रहा था । दस-बारह पगथिये उतर गये। नीचे एक कमरा था । कमरे की भित्ती पर तलवार, बंदूकें वगैरह शस्त्र लटक रहे थे । कमरे में करीबन १५ डाकू जैसे डरावने लोग बैठे थे । बीच में उनका सरदार बैठा था । मुझे देखकर वह बोला : 'सेठ, सोना लेने आये हो ?' मैं बोला नहीं, सर हिलाकर हां कह दिया । उसने कहा : 'अच्छा, अच्छा, कितना सोना चाहिए ?' मैंने कहा : 'एक लाख रूपये का ।' उसकी बड़ी बड़ी आंखे चौड़ी हो गयी । वह वोला :

'अच्छा है, सोना ले जाना, रूपये लाए हो न ?' मैंने कहा : 'नहीं, रूपये साथ नहीं लाया, मेरे गांव में दे दूंगा । आप जिस को भी भेजेंगे, उसको दे दूंगा ।

वह जोर से चिल्लाया : 'अरे शैतानसिंह, क्या तुमने सेठ को रूपये साथ लाने को नहीं कहा था ?' शैतान ने मेरे सामने देखा और मौन रहा। सरदार बोला : 'पहले रूपये चाहिए बाद में सोना.... ।'

मेरे में हिम्मत आ गयी । मैंने कहा : 'आप अपने आदमी को मेरे साथ

अहमदाबाद भेजो, मैं उसको वहां से रूपये दिलवाता हू...वह मुझे वहाँ सोना दे देगा ।' मैंने इतनी सहजता से यह प्रस्ताव रख दिया...कि सरदार को विश्वास हो गया । मैं मेरे मन में मेरे इष्ट देवता को याद करता रहा और उस मुनिराज को याद कर मन से क्षमा मांगता रहा...व्रतभंग किया था जो ।

क्षणभर तो मुझे लगा कि – 'यहां से जिंदा नहीं निकल सकता । यह भयानक डाकूओं का डेरा है । परन्तु इष्टदेवता की कृपा से सरदार को मेरी बात पर विश्वास हो गया और एक डाकू को मेरे साथ भेज दिया । जब हम नडियाद स्टेशन पर आये तब मेरी आंखों पर बंधी हुई पट्टी खोली गई । जाते समय भी स्टेशन से ही मेरी आंखों पर पट्टी बांधी गयी थी ।

हम दोनों अहमदाबाद पहुंचे । सुबह का समय था । मैंने उस डाकू को कहा : 'अपन माणकचौक जाएंगे । वहां मैं रूपये दे दूंगा ।' हम माणकचौक की ओर चले । 'अब इस डाकू से कैसे पिंड छुड़वाना...' यही विचार मेरे मन में चल रहा था । इष्टदेवता का स्मरण भी कर लेता था । माणकचौक आ गया । लोगों को भीड़ थी । मैंने डाकु से कहा : 'तुम यहां खड़े रहो...मैं निपटकर आता हूं... ।' मैं सार्वजनिक शौचालय में घुस गया । दूसरे रास्ते से बाहर निकल कर एक पोल में घुस गया । अहमदाबाद की पोलें ऐसी होती हैं कि पुलिस भी वहां आदमी को खोज नहीं सकती है । मैं बच गया। तीन दिन अहमदाबाद रहकर, मेरे गांव पहुँच गया ।' मैंने पूछा : 'क्या वे लोग पुनः तुम्हारे गांव में नहीं आये ।' उसने कहा : 'नहीं आये, आते तो मैं सावधान था उनसे निपटने के लिए । परन्तु मुझे बार-बार वे मुनिराज याद आते रहे । मुझको बचाने के लिए ही उस दिन गांव से बाहर नहीं जाने का 'दिशापरिमाण व्रत' उन्होंने मुझे दिया होगा ।'

दिशापरिमाण व्रत में दृढ़ रहें :

करमचंद की बात सुनी न ? यह घटी हुई घटना है । यह व्रत बड़ा महत्वपूर्ण है । एक व्रतधारी ने मुझे बताया था कि एक दिन उसने गांव के बाहर नहीं जाने का व्रत धार लिया था । लोभ-लालच के प्रसंग आने पर भी वह गांव के बाहर नहीं गया । शाम को एक अनजान सा व्यक्ति आता है । उस भाई का नाम पूछता है । वह आगंतुक का स्वागत करता है और कहता है : 'आप के पिताजी से मेरे पिताजी ने पांच हजार रूपये लिए थे।

मेरे पिताजी की नोट में मैंने पढ़ा । मैं अमेरिका रहता हूं । मैंने पैसे कमाए हैं । मैंने सोचा कि पिताजी का कर्जा भी मैं चुका दूं । आज रात को ही मुझे प्लेन से विदेश जाना है । आप आज यहां मिल गए, अच्छा हुआ । ब्याज सहित ये २० हजार रूपये ले लीजिए ।' उसने २० हजार रूपये सामने रख दिए । उस व्रतधारी ने मुझे कहा : 'मैं तो आश्चर्यचकित हो गया । यदि मैं उस दिन वहां नहीं होता तो ? रूपये नहीं मिलते, यह बात तो गौण है, परन्तु ऐसे पितृभक्त ईमानदार मनुष्य से मिलना नहीं होता । मैंने ब्याज नहीं लिया, मात्र पांच हजार रूपये ही लिए और वे रूपये पिताजी की स्मृति में एक हॉस्पिटल में दे दिए ।'

है न यह भी एक सुखद अनुभव ? ऐसे तो अनेक व्रतधारी लोगों के अनुभव प्राप्त हो सकते हैं ।

महत्व की बात है संसार परिभ्रमण घटाने की । इस व्रत से संसार परिभ्रमण घटता है । क्रमशः स्थिरता का अभ्यास दृढ़ होता जाता है ।

'मुझे आत्मभाव में स्थिरता पाना है । मुझे स्व-भाव में स्थिर होना है । अब मुझे विभाव-दशा में परिभ्रमण नहीं करना है । अनंतकाल से मैं संसार में विभावदशा में भटकता रहा हूं । परिणाम दुःख, क्लेश और संताप में ही आया है । अब इस जन्म में उस गल्ती को दोहराना नहीं है । दस दिशाओं में भटक-भटक कर अब दुःखी नहीं होना है ।

ऐसा चिंतन आत्मसाक्षी से करना होगा । और इस शुभ विचार को कायम बनाए रखने के लिए यह दिशापरिमाण व्रत लेना होगा । ज्ञानदृष्टि खुल जाने पर व्रत का सरलता से पालन हो सकेगा ।

आप सब की ज्ञानदृष्टि खुले, आप व्रतधारी बनें और परम सुख की ओर अग्रसर बनें-यही मंगलकामना ।

महान् श्रुतधर परम कृपानिधि आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजी स्वरचित 'धर्मबिन्दु' ग्रंथ में श्रावक जीवन का विशेष धर्म बता रहे हैं । बारह व्रतमय विशेष धर्म बताते हुए उन्होंने सर्वप्रथम पांच 'अणुव्रत' बताये, तत्पश्चात् वे तीन 'गुणव्रत' बता रहे हैं । पहला गुणव्रत 'दिशापरिमाण' का बताने के बाद दूसरा गुणव्रत 'भोगोपभोग परिमाण व्रत' आरम्भ कर रहे है !

इस व्रत में दो शब्द हैं : 'भोग' और 'उपभोग' । जो वस्तु एक बार ही भोगी जा सकती है वह 'भोग' और जो वस्तु बार-बार भोगी जा सकती है

वह 'उपभोग' कहा जाता है। भोजन, विलेपन वगैरह वस्तु भोग्य कहलाती हैं। कपड़े, गहने, स्त्री, मकान वगैरह वस्तु उपभोग्य होती हैं, यानी एक ही वस्तु का पुनः पुनः उपभोग किया जा सकता है।

दुनिया में भोग्य और उपभोग्य वस्तु अनेक हैं। सभी वस्तुओं का मनुष्य भोग-उपभोग करता भी नहीं है। इसलिए उन वस्तुओं का परिमाण करना चाहिए। भोग-उपभोग की वस्तु निश्चित कर लेनी चाहिए। यह निर्णय कर लेने से, असंख्य वस्तुओं की 'विरति' हो जायेगी। उन वस्तुओं की अपेक्षा टूट जायेगी। जीवन की आवश्यकतायें मर्यादित हो जाने से जीवन तनावमुक्त बनेगा। इस दृष्टि से यह व्रत बहुत ही उपयोगी व्रत है!

पहली प्रतिज्ञा :

मैं २२ अभक्ष्य का यथाशक्ति त्याग करना हूं।

२२ अभक्ष्य :

१. मांस, गोश्त, अंडा, मछली।
२. शहद।
३. मक्खन।
४. मदिराः शराब, ताड़ी, बियर, भांग, बीड़ी, सिगरेट।
५. ६. ७. ८. ९. उबरोः गुलर का लुंबर, पीपल, बड़ के फल (टेटा), कोठिंबड़ा।
१०. बर्फ, कुलफी।
११. जहर, अफीम, सोमल, वच्छनाग, हरताल।
१२. ओला।
१३. कच्ची मिट्टी।
१४. बैंगन।
१५. बहुत बीजः पंटोल, पपोटा, खसखस, अंजीर।
१६. बोलोः आबवेली, पाड़ल, नींबूकेर, आम, इमली, करमदा हरी हल्दी, आदु, जमीनकन्द वगैरह का बना हुआ आचार-रायता। आचार-रायता वगैरह में चौथे दिन बेइन्द्रिय की और जूठे हाथ से छूने से पचेन्द्रिय जीव की उत्पति हो जाती है।
१७. द्विदलः कच्चा (गरम नहीं किया हुआ) दूध, दही व मट्ठा के साथ कटोल धान्य, कुमटिया, गवार, मेथीदाना, भाजी खाना या मिलाकर खाना।

१८. तुच्छ फल : छोटे बोर, जंगली बेर, पीलु, पीचु ।
१९. अज्ञान फल : कोई भी न जानता हो वैसे फल ।
२०. २१. २२. रात्रि भोजन, चलित रस और अनन्तकाय ।

ये २०-२१-२२ नंबर के अभक्ष्य नहीं खाने की अलग से प्रतिज्ञा करने को होती है । जैसे—

दूसरी प्रतिज्ञा :

मैं रात्रि भोजन का त्याग करता हूं ।

तीसरी प्रतिज्ञा :

मैं यथाशक्ति 'चलित रस' का त्याग करता हूं ।

नीचे की वस्तुएं दूसरे दिन 'चलितरस' बन जाती हैं, इसलिए खाने योग्य नहीं होती हैं —

१. रोटी	११. मलाई
२. नरम पुड़ी	१२. दुधेटी
३. पुरणपोली	१३. रसगुल्ला
४. पापड़ का लोया	१४. कच्ची चासनी
५. दाल	१५. एक तार की चासनी का हलुआ या मावा
६. सब्जी	१६. गीला पापड़
७. दुध	१७. गीली सेव
८. खीर	१८. गीला भुजिया-पकोड़े
९. श्रीखंड	१९. भीगी हुई दाल
१०. रायता	२०. पानीवाली चटनी

इन वस्तुओं में से जिन वस्तुओं का त्याग आप करना चाहें, कर सकते हैं ।

चौथी प्रतिज्ञा :

मैं ३२ अनन्तकाय वनस्पति का यथाशक्ति त्याग करता हूं ।

१. सुरणकन्द	१२. हरी मोथ	२३. खिलोड़ा
२. वज्रकन्द	१३. मूल	२४. अमृतवेल
३. हरी हल्दी	१४. प्याज	२५. वत्थुला भाजी
४. आलू	१५. हरी कचुरो	२६. भूमि फोडा
५. हीरलीकंद	१६. शतावरी	२७. सुअरवेल

६. लहसन	१७. कुवार पाठा	२८. पालकभाजी
७. गज्जर	१८. थोर	२९. कोमल इमली
८. पसिनोकन्द	१९. हरी गीलोच	३०. रतालु
९. गरमर	२०. वंश करेला	३१. पींडालु
१०. कसेरो	२१. लुणी	३२. कोमल वनस्पति
११. थेग	२२. साजी वृक्ष	

पाँचवी प्रतिज्ञा :

मैं अनाज, कठोल, साग, फल और मेवा का निम्न प्रमाण रखता हूं। अन्य का त्याग करता हूं।

अनाज	कठोल	साग	फल	मेवा
गेहूं	कुमटिया	आलकूल	अनार	अखरोट
चावल	ग्वार	दुधी (धीया)	अनारस	दाख
ज्वार	चना	करेला	अमरूद	बादाम
मक्की	तुअर	केर	आंवला	खजूर
जौ	मटर	कोठिंवडा	पीच	चिरोंजी (चारोली)
कोद्रु	वटाना	कंटोला	करोंदा	काबुली मेवा
कंगनी	मूंग	गिलकी	कमलकाकड़ी	खारक
साबुदाना	मेथी	टींडोरा	केला	नारियल
सरसों	मोठ	टींडसी	खरबूज	पिस्ता
तिल	चौला	तुरई	मतीरा	मूंगफली
खसखस	वाल	नींबू	(तरबूज)	सुपारी
बटी	फणसी	परवल	रायण	सोंफ
राई	उड़द	टमाटर	गुंदा	इलायची
अजवायन	कलथ	भोंड़ी	जामुन	लौंग (लवंग)
जीरा	मसूर	मिर्च	नारंगी	
धनिया	--	मोगरी	सेव	
सुआ	--	सांगरी	पपीता	
		सरगवा	फणस	
		अमचूर	फालसा	

कोकम	बीजोरा
गुंदा	मोसंबी
सुआभाजी	रामफल
सींगफली	सीताफल
	चीकू
	शहतूत
	सिंघारे

छट्ठी प्रतिज्ञा :

मैं पन्द्रह कर्मादान का त्याग करना हूं ।

पन्द्रह प्रतिज्ञा :

१. **इंगालकर्म :** जिस व्यापार में भट्टी करनी पड़ती हो, ऐसे सभी व्यापार का मैं त्याग करता हूं । चूना, ईंट, कोयला वगैरह का व्यापार ।

२. **वनकर्म :** खेती, बाग, बांस, लकड़ी वगैरह का व्यापार छोड़ता हूं ।

३. **शकटकर्म :** सभी वाहन (मोटर, घोड़ागाड़ी, रिक्शा...) का धंधा छोड़ता हूं ।

४. **भाड़ीकर्म :** मकान, जमीन, वाहन इत्यादि को किराये देने का व्यापार छोड़ता हूं । वेश्यावृत्ति का त्याग करता हूं ।

५. **फोड़ीकर्म :** जमीन को चीरना, सुरंग, खाई, सरोवर वगैरह खुदवाऊंगा नहीं । खेती करवाऊंगा नहीं । पत्थर की खदान का धंधा करुंगा नहीं, ठेका भी नहीं लूंगा ।

६. **दन्तवाणिज्य :** हाथीदांत, शंख, कौड़ी, मोती वगैरह का व्यापार नहीं करूंगा ।

७. **लाख-वाणिज्य :** लाख, गोंद, साबुन, लोहा, गलीव खार का व्यापार नहीं करूंगा ।

८. **रस-वाणिज्य :** मांस, शराब, शहद, मक्खन का व्यापार नहीं करूंगा ।

९. **केशवाणिज्य :** मनुष्य के, पशु के, पक्षी के बालों का व्यापार नहीं करूंगा ।

१०. **विष-वाणिज्य :** सभी प्रकार के जहर एवं मादक पदार्थों के व्यापार का त्याग करता हूं ।

११. **यंत्रपीलण-कर्म :** मील, यंत्र, घाणी, वगैरह का व्यापार नहीं करूंगा ।

घंटी वगैरह यंत्र घर में रखने की जयणा रखता हूं ।

१२. **निर्लांछन-कर्म :** मनुष्य, पशु-पक्षी के अंग-उपांग के छेदन-भेदन का व्यापार नहीं करूंगा ।

१३. **दवदान-कर्म :** वन में अग्निदाह लगाने के व्यापार का त्याग ।

१४. **शोषण-कर्म :** सरोवर, तालाब, वगैरह का पानी निकालने का धंधा नहीं करूंगा ।

१५. **असतीपोषण :** शौक से या व्यापार हेतु जुआरी को, चोर को, वेश्या को, कुत्ते को, बिल्ली को, तोता-मैना को, कबूतर वगैरह को पालूंगा नहीं ।

सातवीं प्रतिज्ञा :

मैं प्रतिदिन १४ नियम धारण करूंगा, अथवा जिन्दगी के लिए १४ नियम धारण कर लेता हूं ।

१. सचित	९. शयन	तेउकाय
२. द्रव्य	१०. विलेपन	वायुकाय
३. विगह	११. ब्रह्मचर्य	वनस्पतिकाय
४. उपानह	१२. दिशा	त्रसकाय
५. तबोल	१३. स्नान	असि
६. वस्त्र	१४. भात-पानी	मसि
७. पुष्प	पृथ्वीकाय	कृषि...
८. वाहन	अपकाय	

ये नियम बहुत महत्वपूर्ण हैं । प्रतिदिन इन नियमों का पालन करनेवाला मनुष्य असंख्य पापों से बच जाता है ।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

इस बीच कितनी ही घटनाएँ घटित हो गई । संसारकी रंगभूमि पर घटित न हो सके ऐसा कुछ भी नहीं है । अन्ध कुणाल प्रभु-भक्ति में बहुत आगे बढ़ गया था । उसके भजनों की धुन, सितार के मधुर स्वर और उसके कण्ठकी मधुरता सभी अपूर्व थे । उसमें भी फिर उसके हृदय में से निकलता हुआ वह भावपूर्ण मधुर गान तो कुछ निराला ही था । उसकी प्रवीणता की मर्यादा भी बहुत ऊँची थी । सुननेवाले उसकी भक्तिमय गान-तानमें डूब-से जाते थे । खाना-पीना तक भूल जाते थे । भक्तोंकी मण्डली एकत्र करके कुणाल अपने जीवनको इस प्रकार प्रभु-भक्ति में पूर्णतया प्रवृत्त कर चुका था । भक्तिरस प्रधान गीतोंमें उसकी ख्याति इतनी अधिक बढ़ गई थी कि दूर-दूरसे लोग आकर उसके मधुर कण्ठसे निकलते हुए भक्तिरस को पानकर तृप्त हो जाते थे ।

किन्तु इतना समय व्यतीत हो जानेपर भी सुनन्दाका हृदय उसी प्रकार शोकपूर्ण ही बना हुआ था । वह प्रभु से प्रार्थना करती कि :– "हे प्रभु ! क्या मुझे जीवनभर इसी प्रकार समय व्यतीत करना होगा ? हे निराधारके अवलम्बन ! अनाथोंके नाथ ! हमारी ईमानदारी का क्या यही परिणाम होना चाहिए था ? क्या आप दुर्जनों के ही मनोरथ सफल करते रहेंगे ? संसार में लोग कहते हैं कि सत्यकी विजय होती है, किन्तु हमें तो उससे उलटा ही अनुभव हो रहा है । हा ! देव !! यदि आपमें कुछ शक्ति है तो हमें ऊघर ले जाइये ! और जिन्होंने अपनी दुर्जनतासे वर्षों पूर्व अपना मनोरथ सफल कर लिया है, उन्हें निष्फल कर दीजिये !" किन्तु वर्षों वीत जानेपर भी अभी तक उसकी प्रार्थना सफल नहीं हो सकी थी । फिर भी सुनन्दामें धैर्यकी अटूटमात्रा भरी हुई थी । उसे प्रभुपर दृढ़-विश्वास था । प्रतिदिन प्रार्थना करके भक्तिपूर्वक हृदय की एकाग्र वृत्ति से वह शक्तिमान के प्रति विनम्र होकर शुभ पुद्गलों का वातावरण सञ्चित करती थी । उन पुण्यमय पुद्गलोंसे पापोंका नाश होता था । शेष-सञ्चित पाप भुगत लिये जाने से छूटते जा रहे थे । इसप्रकार वह शोकमग्ना अपना समय व्यतीत कर रही थी ।

सुनन्दाकी प्रार्थनापर महाराज अशोक ने वयस्क-अवस्थामें आजानेसे एक राजकन्या के साथ अन्ध कुणाल का विवाह कर दिया था ; किन्तु सुनन्दाकी ओरसे जब कभी प्रसंगोपात्त समाचार पहुँचते, उस समय अवश्य महाराज को उसकी स्मृति हो जाती थी, और इसी प्रकारकी एक स्मृतिके अनुसार अशोक ने कुणाल का विवाह कर दिया था !

सुनन्दा कुछ विचारक तो थी ही, साथही वह दूरदर्शी भी थी। महाराज अशोक द्वारा कुणालका विवाह कराने में भी उसका विशेष उद्देश्य था। यद्यपि उस उद्देश्य का साध्य होना तो दैवाधीन बात थी; फिर भी मनुष्यको प्रयत्न तो करना ही चाहिये। दैवाधीन होने से इस प्रकारकी प्रवृत्तियों को न होने योग्य मानकर यदि मनुष्य प्रयत्न करना छोड़दें तो उसे कोई भी लाभ नहीं हो सकता। इसीलिए कैसा भी सङ्कट क्यों न हो, मनुष्यको हिम्मत न हारते हुए सत्कर्म, प्रभु-भक्ति पुण्यमय जीवन आदिके द्वारा पवित्र वातावरण निर्माण कर अन्तरायों को दूर हटाना ही चाहिए। सुनन्दा ने भी किसी अपूर्व भावी सुखकी आशा से कुणाल की इच्छा न होते हुए भी चाहे जिस प्रकार समझाकर महाराज अशोक-द्वारा उसका विवाह सम्पन्न करवा दिया था।

बाला शरतश्री की अवस्था इस समय अठारह वर्षकी थी। राजकन्या होते हुए भी उसमें उद्दण्डता या छिछोरापन नाम को भी न था। कुमारी अवस्था में उसके चाहे जैसे विचार क्यों न रहे हो, किन्तु इस समय तो सादगी में ही उसने अपनी महत्ता समझ ली थी। अन्धपतिकी भक्ति ही इस समय उसका सर्वस्व था। सुनन्दा का भी वह सास के समान आदर करती हुई उसके प्रति उतनी ही विनयशीलता प्रकट करती थी। सेवाको ही उसने अपना परमधर्म मान लिया था। जिस प्रकार गान्धारी धृतराष्ट्र के प्रति अनन्य श्रद्धा रखती थी और सुकन्या ने जिस प्रकार च्यवनऋषिकी सेवा करके प्रभुमय जीवन बिताया था, उसी प्रकार वर्तमानकाल में शरतश्री का जीवन क्रम भी दूसरी गान्धारी या सुकन्याके समान ही व्यतीत हो रहा था।

उसकी जो चार दासियाँ थी, उनमें उसीके समान सत्यमार्गपर चलनेवाली और कुणाल के प्रति सच्ची भक्ति रखनेवाली तथा उसके सुख में सुखी एवं दुःख में दुःख अनुभव करनेवाली चन्दा नामकी दासी भी थी। जिसके नाम

और कामका परिचय मिल ही चुका है ? चन्दा की यद्यपि युवावस्था ही थी; फिर भी वह चौकस-सावधान और बुद्धिमती थी । बात ही बातमें दूसरे का मन जीत लेने और उसे वश में कर लेने तथा उसके हृदयकी गुप्तसे गुप्तबात निकाल लेने की कुशलता उसमें बड़ी ही अपूर्व थी । चन्दा वास्तव में चन्दा ही थी । कुणाल के अन्धत्व के लिए भी उस युवती वाला के हृदय में शूल-सा चुभता रहता था । इसीलिए उसे विश्वस्त मानकर सुनन्दा ने सत्य घटनाकी खोजके लिए अवन्ती भेजा था । अवन्ती में आकर चन्दाने क्या किया ? यह हम पिछले परिच्छेद में जान ही चुके हैं कि श्यामा के हृदय में पैठकर उसने किस युक्ति से उसके अन्तरकी बातका पता लगा लिया !

अपना कार्य समाप्त होते ही चन्दा एकदम अवन्ती के राजप्रासाद से गुम हो गई थी । जब उसे अपने जाने की इच्छा हुई, तब उसने ऐसा संयोग उपस्थित किया कि जिससे उसके गुम हो जाने के विषय में सब लोग नानाप्रकारकी कल्पना करने लगे । कोई कहता था कि वह कुँए में डूबकर मर गई और कोई कहता कि युवा होने से वह किसी को साथ लेकर भाग गई । संसार में पुरूष तो स्त्रियोंका हरण करते सुनेगये हैं; किन्तु चन्दा ने पुरूष हरण का एक नयाही उदाहरण लोगों के सामने रखा है । जो जिसके जीमें आवे वह भले ही वैसा कहता रहे । दुनिया के मुँहपर ताला थोड़े ही लगाया जा सकता है ?

क्रमशः

पुस्तक समीक्षा

नाम : महामनीषी आचार्य श्री विद्यासागर

लेखक : डा॰ विमलकुमार जैन

प्रकाशक : ज्ञानोदय संस्थान जैन बाग, वीर नगर, सहारनपुर-247001 (उ॰ प्र॰) ।

मूल्य : 100/-

यह पुस्तक महामनीषी आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी के जीवन परिचय के साथ-साथ उनके साहित्यक अवदान से भी अवगत कराती है । पुस्तक मे १४ अध्याय है जिनमें आचार्य जी की अमृतस्वस्प वाणी की ओजस्वी धारा से बहने वाला उनका चिन्तन, चाहे वो गद्य के रूप में हो या पद्य के रूप मे, का विस्तृत विवेचन किया गया है तथा उनके सारगर्भित प्रवचनो के साथ २ रचनाओं की भी व्यख्या की गई है ।

नाम : जैन धर्म दर्शन

लेखक : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

प्रकाशक : शिक्षा भारती काश्मीरी गेट दिल्ली - 6 ।

जिनागम के मूल तत्वो की व्यख्या का विशद् रूप इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है पुस्तक में छः अध्याय हैं जिनमें ऐतिहास के साथ-साथ तत्व दर्शन का भी अति सुन्दर ढंग से प्रतिपादन किया गया है ।

नाम	:	Jain Philosophy and Religion.
लेखक	:	Muni Shri Nyayarvijayaji.
अंग्रेजी अनुवाद	:	Nagin J. Shah
मूल्य	:	450/-
प्रकाशक	:	Motilal Banarsidas Publishers Ltd. Bhogilal Leharchand Institute of Indology. Mahattara Sadhir Shree Mrigavatiji foundation Delhi.

नाम	:	श्री गुर्णवर्मा चरित्रम (गुजराती)
लेखक	:	मुनि श्री सर्वोदय सागर जी महाराज
प्रकाशक	:	मुनि श्री उदय रत्न सागर महाराज

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English		
1. *Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2. James Burges – *The Temples of Śatruńjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
[It is the glorification of the sacred mountain *Śatruńjaya.*]		
3. P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4. Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi		
5. Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6. Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7. Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8. Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani		50.00
9. Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír		60.00
10. Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät		45.00
11. Ganesh Lalwani – Pańcadaśí		100.00
12. Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më		30.00
Bengali		
13. Ganesh Lalwani – Atimukta		40.00
14. Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15. Puran Chand Shyamsukha – Bhagaván Mahávír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से
सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक)
के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

**One of its Kind, most Valuable,
Quarterly research Journal
on Jainism**

**Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-**

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के
गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के
आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHÁTA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से
पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 4

'Titth ayara'

Registered with the registered of Newspapers for India under No. R.N. 3018/77

July 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225